संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार
सत्यमेव जयते

# सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र

(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत संस्थान)

**सीसीआरटी समाचार** **CCRT Newsletter**

खण्ड 1 • अंक 5 • दिसम्बर 2023 Volume 1 • Issue 5 • December, 2023

## कला मंथन

पाश्चात्य जगत में सर्वप्रथम प्लेटो ने कला के विषय में प्रश्न प्रस्तुत किए। 'कलावस्तु' और 'आकार' इन संज्ञाओं को लेकर उन्होंने विश्लेषणात्मक विचार किया। उन्होंने अपने 'संवाद' शीर्षक ग्रंथ में अपने विचार प्रकट किए। अपने 'रिपब्लिक' ग्रंथ में उन्होंने 'अनुकरण' का सिद्धांत प्रस्थापित किया। यह सिद्धांत सौंदर्यशास्त्र के क्षेत्र में अमोल रहा। ॲरिस्टॉटल ने अपने 'पोएटिक्स' ग्रंथ में इस सिद्धांत का समर्थन किया। अनुकरण कब और क्यों सुंदर बनता है, यही ग्रीक विद्वानों के चिंतन का विषय है।

अठारहवीं सदी के आरंभिक काल में एडिसन ने 'प्लेजर्स ऑफ इमॅजिनेशन' निबंध लिखा। इस निबंध के कारण लोगों का कला विषयक दृष्टिकोण बदला। एडिसन के अनुसार 'कल्पना' में जो आनंद मिलता है, वह आनंद 'दृष्टिगत' होता है। यह आनंद द्रष्टा, श्रोता और दर्शक का आनंद होता है। इसी सदी में 'अभिरुचि' शब्द का भी उपयोग हुआ। इसके पूर्व शॅफ्टबरी ने 'अनासक्त आनंद' संज्ञा का आविष्कार किया। इससे एक नवीनतम धारणा का जन्म हुआ। आज द्रष्टा और दर्शक को केंद्र बिंदु मानकर कला पर विचार हो रहा है। इसका मतलब यह होता है कि सौंदर्यशास्त्र का विकास हो रहा है। इसकी फलश्रुति यह है कि अनुकरण का सिद्धांत अपूर्ण माना गया।

अठारहवीं सदी में ही 'सुंदर' और 'उदात्त' शब्दों का उपयोग हुआ। इस चिंतन को नई दिशा मिली। इस चिंतन में अब दर्शकों के विचारों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। दर्शकों का कलाकृति को लेकर क्या अनुभव रहा है, इस सत्य को भी गंभीरता से लिया गया। प्रत्यक्ष कला और कला अनुभव क्या अंतर है, इस पर बर्क नामक विद्वान ने विचार किया। यहीं से 'प्लेजर' और 'डिलाइट' शब्दों का चयन हुआ। इसके विपरीत 'प्रतिभा' का सम्बंध दर्शक से ना होकर कलाकार से है, इस विचार को स्पष्ट रूप से रखा गया। यह एक नवीन विचार था और इस पर विस्तृत चर्चा हुई।

**डॉ. विनोद नारायण इन्दूरकर**
अध्यक्ष, सीसीआरटी

## भारतीय संस्कृति

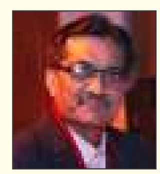

भारत वसुधैव कुटुंबकम्, शांति, प्रेम, सहिष्णुता, अहिंसा, ज्ञान की खोज और पंथ-निरपेक्षता जैसे सांस्कृतिक मूल्यों के लिए जाना जाता है। हमारा देश अनेक प्रकार की विविधताओं से भरा है। यहां एक ओर वेशभूषा-विन्यास, रीति-रिवाज, परंपराओं, धर्म, दर्शन और कला जैसे सभी प्रमुख क्षेत्रों में वैविध्य के दर्शन होते हैं तो दूसरी ओर अद्भुत एकत्व भी दिखता है। वास्तव में विविधता में एकता ही भारत की मूल पहचान है।

हमारा देश राष्ट्रीयता के साथ-साथ स्थानीय संस्कृतियों से समृद्ध है। विभिन्न क्षेत्रों, नगरों की विशेषताएं हमारे देश को विलक्षण बनाती हैं जो भौगोलिकता मात्र तक सीमित नहीं हैं। इनमें वास्तुकला, लोक गीत-संगीत, भाषा, प्रकृति, पर्यावरण आदि जैसे विभिन्न पक्ष देखे जा सकते हैं। प्रायः ये पक्ष आपस में जुड़े होते हैं, परंतु यदा-कदा सीमाओं का अतिक्रमण भी करते हैं। स्थानीयता से अनपेक्ष इनके मूल तत्व भारतीयता का सहज आधार बनते हैं और यही हमारी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहर हैं।

**श्री ऋषि वशिष्ठ**
निदेशक, सीसीआरटी

## प्रमुख गतिविधियों की झलकियाँ

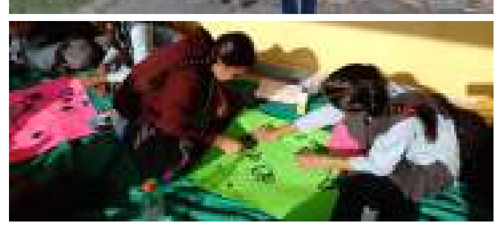

# दिसम्बर 2023 की प्रमुख गतिविधियाँ

## प्रशिक्षण / TRAINING

- **एनईपी-2020 के अनुरूप 483वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम/ ORIENTATION COURSE IN LINE WITH NEP 2020**

(दिसंबर 04-23, 2023 सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर में)

इस पाठ्यक्रम में 10 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों - क्रमशः आंध्र प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल से कुल 45 शिक्षकों (11 महिला शिक्षकों सहित) ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुरूप सांस्कृतिक शिक्षा को निर्धारित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रगति में, सेवारत शिक्षकों के लिए 483वां अनुस्थापन पाठ्यक्रम 4 से 23 दिसंबर, 2023 तक उदयपुर के सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र में संचालित किया गया। इस गहन कार्यक्रम का उद्देश्य नवीन शिक्षण पद्धतियों के साथ और एनईपी-2020 में उल्लिखित परिवर्तनकारी शिक्षा सुधारों के अनुसार अपना कौशल बढ़ाने में शिक्षकों को सक्षम बनाना है।

अनुस्थापन पाठ्यक्रम का मुख्य आकर्षण व्यावहारिक शिल्प सत्र था, जहां प्रतिभागी मिट्टी के बर्तन बनाने, टाई और डाई, बुक बाइंडिंग और प्राकृतिक कचरे से खिलौनों के निर्माण सहित विविध कलात्मक गतिविधियों में लगे हुए थे। इन व्यावहारिक कार्यशालाओं ने न केवल रचनात्मकता को बढ़ावा दिया, बल्कि शिक्षकों को अपने शैक्षणिक दृष्टिकोण में कला और शिल्प को शामिल करने के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि भी प्रदान की। शिल्प से परे व्यावहारिक कौशल पर जोर दिया गया, क्योंकि प्रतिभागियों ने शिक्षण-सीखने की सामग्री, जैसे कि पाठ योजना और परियोजना कार्यों के निर्माण में सक्रिय रूप से योगदान दिया और एक सहयोगात्मक और संसाधनपूर्ण सीखने के माहौल को बढ़ावा दिया।

दृश्य, प्रदर्शन और साहित्यिक कलाओं के विभिन्न पहलुओं पर आधारित सैद्धांतिक सत्र, अनुस्थापन पाठ्यक्रम का एक और अभिन्न अंग थे। इन सत्रों में कला शिक्षा के सैद्धांतिक आधारों पर चर्चा की गई, जिससे प्रतिभागियों को समग्र शिक्षा में कला की भूमिका की गहरी समझ प्राप्त हुई। सैद्धांतिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक गतिविधियों को मिलाकर, 483वें अनुस्थापन पाठ्यक्रम ने न केवल भाग लेने वाले शिक्षकों को समृद्ध किया, बल्कि उनकी संबंधित कक्षाओं में नवीन और समावेशी शिक्षण प्रथाओं के कार्यान्वयन के लिए मंच भी तैयार किया।

प्रतिभागी कार्यक्रम के दौरान तैयार की गई अपनी शिक्षण अधिगम सामग्री प्रस्तुत करते हुए

छड़ी कठपुतली के माध्यम से खेल का प्रदर्शन करते प्रतिभागी

असम के लोक नृत्य - बिहू का प्रदर्शन

- **कार्यशाला/WORKSHOP**

**'स्कूली शिक्षा में शिल्प कौशल को एकीकृत करने' पर कार्यशाला**

(दिसंबर 05-14, 2023 सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली में)

इस कार्यशाला में 13 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों - क्रमशः आंध्र प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, गुजरात, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, झारखंड, कर्नाटक, महाराष्ट्र, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल से कुल 75 शिक्षकों (29 महिला शिक्षकों सहित) ने भाग लिया।

सीसीआरटी, नई दिल्ली ने 'सेवारत शिक्षकों के लिए स्कूली शिक्षा में शिल्प कौशल को एकीकृत करने' पर केंद्रित एक परिवर्तनकारी कार्यशाला की मेजबानी की। उन्हें

कार्यशाला के दौरान तैयार किए गए शिल्प कार्य को प्रस्तुत करते हुए प्रतिभागी

अनुभवी विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में पारंपरिक शिल्प की समृद्ध टेपेस्ट्री से रूबरू होने का अनूठा अवसर मिला। कार्यशाला ने एक ज्ञान-साझाकरण मंच के रूप में सेवा प्रदान की, जहां प्रतिभागियों ने विभिन्न शिल्प परंपराओं में प्रत्यक्ष अंतर्दृष्टि प्राप्त की, जिससे भारत की विरासत में अंतर्निहित सांस्कृतिक और कलात्मक विविधता के लिए गहरी सराहना को बढ़ावा मिला।

चेरियल मास्क की कला सीखते प्रतिभागी

कार्यशाला में श्री आशीष मालाकार जैसे प्रतिष्ठित कलाकार शामिल थे, जिन्होंने सोलापीठ की जटिल कला का प्रदर्शन किया, श्री सुरेश चौधरी ने कांगड़ा पेंटिंग का प्रदर्शन किया, श्रीमती संध्या शुक्ला ने मंजूषा पेंटिंग में अपनी विशेषज्ञता साझा की, श्री विलास महाजन ने जातक पेंटिंग पर ध्यान केंद्रित किया, और एस. अश्विनी ने पहाड़ी पेंटिंग की तकनीकों पर प्रकाश डाला। इन विशेषज्ञों ने न केवल अपने कौशल के नमूने प्रस्तुत किए, बल्कि कार्यशाला स्थल के सौंदर्यीकरण अभियान में भी सक्रिय रूप से भाग लिया, जिससे एक जीवंत और आकर्षक शिक्षण वातावरण में योगदान मिला।

शिल्प कौशल को निखारने के अलावा, प्रतिभागियों को इन पारंपरिक कला रूपों को स्कूली शिक्षा में शामिल करने के व्यापक महत्व से अवगत कराया गया। कार्यशाला ने न केवल उपस्थित शिक्षकों की कलात्मक दक्षता को बढ़ाया, बल्कि उन्हें इन शिल्पों को अपनी शिक्षण पद्धतियों में एकीकृत करने के लिए भी प्रोत्साहित किया, जिससे भविष्य में उनके छात्रों के लिए एक समृद्ध और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शैक्षिक अनुभव तैयार हुआ।

श्री विलास महाजन सौंदर्यीकरण अभियान के दौरान अपने द्वारा चित्रित जातक पेंटिंग की व्याख्या करते हुए।

## 'एनईपी-2020 के अनुरूप शिक्षा में कठपुतली की भूमिका' पर कार्यशाला

(06 से 20 दिसंबर, 2023 सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद में)

इस कार्यशाला में 09 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों - क्रमशः असम, गोवा, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, महाराष्ट्र, मणिपुर, राजस्थान और पश्चिम बंगाल से कुल 35 शिक्षकों (08 महिला शिक्षकों सहित) ने भाग लिया।

हैदराबाद में सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र कठपुतली कला की लयबद्ध गूँज से झंकृत हो उठा क्योंकि इसने सेवारत शिक्षकों के लिए 'एनईपी-2020 के अनुरूप शिक्षा में कठपुतली की भूमिका' की खोज के लिए समर्पित एक कार्यशाला की मेजबानी की। प्रतिभागियों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 द्वारा निर्धारित परिवर्तनकारी लक्ष्यों के साथ अपने शैक्षणिक दृष्टिकोण को निर्धारित करते हुए एक गतिशील सीखने के अनुभव से साक्षात्कार हुआ।

कार्यशाला में शिक्षा के एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कठपुतली के बहुमुखी पहलुओं पर चर्चा की गई। अनुभवी कठपुतली कलाकारों और शिक्षाविदों ने प्रतिभागियों को कक्षा में जुड़ाव बढ़ाने और समग्र सीखने के अनुभवों को बढ़ावा देने के लिए कठपुतली की अभिव्यंजक क्षमता का उपयोग करने में मार्गदर्शन किया। पारस्परिक चर्चा सत्रों के माध्यम से, शिक्षकों ने अनुभवात्मक और समावेशी शिक्षा पर एनईपी-2020 के साथ तालमेल बिठाते हुए अपने पाठों में कठपुतली को शामिल करने के अभिनव तरीके खोजे।

जैसे-जैसे प्रतिभागियों ने कठपुतली के विभिन्न आयामों का पता लगाया, कार्यशाला सैद्धांतिक समझ से आगे व्यावहारिक सत्रों तक बढ़ी। शिक्षकों ने न केवल कठपुतली कला सीखी, बल्कि रचनात्मक और प्रासंगिक रूप से महत्त्वपूर्ण शिक्षण सामग्री के विकास के लिए एनईपी-2020 के साथ तालमेल बिठाते हुए सक्रिय रूप से अपनी कठपुतली-आधारित शिक्षण सामग्री भी बनाई। इस गहन अनुभव ने शिक्षकों को अपनी कक्षाओं को कठपुतली के मंत्रमुग्ध जादू से भरने, एक गतिशील और पारस्परिक चर्चा वाले शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा देने के लिए सशक्त बनाया।

**'शिक्षा में रंगमंच कला' पर कार्यशाला**

(19 से 23 दिसंबर, 2023 डाइट, सूरत, गुजरात में)

इस कार्यशाला में सूरत, गुजरात और आसपास के जिलों से कुल 107 शिक्षकों (28 महिला शिक्षकों सहित) ने भाग लिया।

सूरत में जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डीआईईटी) थिएटर की जीवंत भावना का साक्षात् मंच बना, जहां सीसीआरटी ने सेवारत शिक्षकों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया। थिएटर कला के प्रमुख विशेषज्ञ डॉ. विजय कुमार सेवक ने शिक्षा में थिएटर और नाटक को एकीकृत करने के लिए विविध दृष्टिकोणों की खोज के माध्यम से शिक्षकों का मार्गदर्शन किया। यह पहल गतिशील और आकर्षक शिक्षण पद्धतियों को बढ़ावा देने की सीसीआरटी की प्रतिबद्धता के अनुरूप है।

कार्यशाला में थिएटर कला की बहुमुखी दुनिया पर प्रकाश डाला गया और शिक्षा पर उनके गहरे प्रभाव पर जोर दिया गया। प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम में नाटकीय तत्वों को शामिल करने, रचनात्मकता को बढ़ावा देने और छात्रों के बीच संचार कौशल को बढ़ाने के नवीन तरीकों के बारे में जानकारी प्राप्त की। विशेष रूप से, कार्यशाला ने भाग लेने वाले शिक्षकों को स्थानीय और प्रासंगिक रूप से महत्त्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य प्रदान करते हुए, भवाई के पारंपरिक थिएटर लोक रूप को उजागर करके गुजरात की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन किया।

डॉ. विजय कुमार सेवक की विशेषज्ञता ने शिक्षा में थिएटर कला की परिवर्तनकारी क्षमता पर प्रकाश डाला। व्यावहारिक सत्रों ने शिक्षकों को विभिन्न नाटकीय दृष्टिकोणों का पता लगाने और प्रयोग करने की अनुमति दी, जिससे उन्हें अपनी कक्षाओं में नाटकीय स्वभाव लाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कार्यशाला में भाग लेकर शिक्षक अपने शिक्षण को थिएटर की गतिशीलता से भरने के लिए तकनीकों के भंडार से सुपरिचित हुए, जिससे उनके छात्रों के लिए अधिक आकर्षक और समग्र शिक्षण अनुभव में बढ़ावा मिला।

भूमिका और चरित्र निभाने की कला सीखना

कार्यशाला के दौरान सीखे गए नाटक का प्रदर्शन करते प्रतिभागी

प्रतिभागी अपनी शिक्षण अधिगम सामग्री प्रस्तुत करते हुए

## छात्रवृत्ति और अध्येतावृत्ति / SCHOLARSHIP AND FELLOWSHIP

- सीसीआरटी ने वर्ष 2023-24 के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा खोज (सीटीएसएस) योजना के तहत छात्रवृत्ति प्रदान करने के साथ-साथ 01 से 04 दिसंबर 2023 तक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद में छात्रवृत्ति धारकों के नवीनीकरण के लिए क्षेत्रीय चयन समिति (आरएससी) की बैठक का आयोजन किया। इस बैठक में साक्षात्कार/परीक्षण आयोजित करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के कुल 15 विशेषज्ञों को जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

- सीसीआरटी ने वर्ष 2023-24 के लिए सांस्कृतिक प्रतिभा खोज (सीटीएसएस) योजना के तहत छात्रवृत्ति प्रदान करने के साथ-साथ छात्रवृत्ति धारकों के नवीनीकरण के लिए 12 से 19 दिसंबर 2023 तक सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में क्षेत्रीय चयन समिति (आरएससी) की बैठक आयोजित की। इस बैठक में साक्षात्कार/परीक्षण आयोजित करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों के कुल 23 विशेषज्ञों को जूरी सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया।

## विस्तार सेवाएँ तथा समुदाय पुनर्निवेश कार्यक्रम/EXTENSION SERVICES AND COMMUNITY FEEDBACK PROGRAMME (ESCFP)

### सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्लीः

| क्रम सं. | स्थान | अवधि |
|---|---|---|
| 1. | केंद्रीय विद्यालय सेक्टर-4, आर.के.पुरम, नई दिल्ली | 29 नवंबर - 01 दिसंबर, 2023 |
| 2. | सर्वोदय कन्या विद्यालय, शाहाबाद, नई दिल्ली | 11-13 दिसंबर, 2023 |
| 3. | राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, निठारी, नई दिल्ली | 11-13 दिसंबर, 2023 |
| 4. | राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, नंद नगरी, दिल्ली | 20-22 दिसंबर, 2023 |
| 5. | राजकीय को-एड सीनियर सेकेंडरी स्कूल, झटीकरा, नई दिल्ली | 20-22 दिसंबर, 2023 |

### क्षेत्रीय केन्द्र हैदराबादः

| क्रम सं. | स्थान | अवधि |
|---|---|---|
| 1. | जेड.पी. हाई स्कूल, यपराल, जिला मेडाचल-मल्काजगिरी, हैदराबाद | 06-08 दिसंबर, 2023 |
| 2. | केन्द्रीय विद्यालय, बोलारम, सिकंदराबाद, हैदराबाद | 14-16 दिसंबर, 2023 |
| 3. | जेड. पी. हाई स्कूल, कोवकुर, जिला मेडचल-मल्काजगिरी, हैदराबाद | 18-20 दिसंबर, 2023 |
| 4. | राजकीय उच्च विद्यालय, जमिस्तानपुर, रामनगर, हैदराबाद | 21-23 दिसंबर, 2023 |

## क्षेत्रीय केन्द्र उदयपुरः

| क्रम सं. | स्थान | अवधि |
|---|---|---|
| 1. | महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय, बड़ी, बड़गांव, उदयपुर | 04-06 दिसंबर, 2023 |

## क्षेत्रीय केन्द्र गुवाहाटीः

| क्रम सं. | स्थान | अवधि |
|---|---|---|
| 1. | बभरबारी हाई स्कूल, गुवाहाटी, असम | 04-06 दिसंबर, 2023 |
| 2. | नूनमती हाई स्कूल गुवाहाटी, असम | 05-07 दिसंबर, 2023 |

## क्षेत्रीय केन्द्र दमोहः

| क्रम सं. | स्थान | अवधि |
|---|---|---|
| 1. | महारानी लक्ष्मीबाई राजकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, दमोह | 28-30 दिसंबर, 2023 |

दिसम्बर 2023 के महीने में सीसीआरटी के मुख्यालय और उसके चार क्षेत्रीय केंद्रों में कुल 2579 बच्चों को विस्तार सेवाएँ तथा समुदाय पुनर्निवेश कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित किया गया।

महाराजा सवाई मान सिंह द्वितीय संग्रहालय जयपुर ने 5 से 8 दिसंबर 2023 तक जयपुर में 'जयपुर इतिहास महोत्सव' का आयोजन किया। स्मारकों के माध्यम से शिक्षा (ईटीएम) में 100 से अधिक भाग लेने वाले स्कूलों के छात्रों ने इतिहास से परे स्मारकों की खोज करते हुए एक बहु-विषयक यात्रा शुरू की है। भौतिकी, रसायन विज्ञान, गणित, भूगोल और अन्य विषयों में गहनता से इन वास्तुशिल्प चमत्कारों के भीतर समृद्ध शैक्षिक क्षमता का पता चलता है और साथ ही साथ स्मारकों से भी जुड़े रहते हैं। देश के सभी हिस्सों से आए बच्चों ने नृत्य, संगीत, थिएटर के माध्यम से कार्यक्रम प्रस्तुत किए। विभिन्न क्षेत्रों के स्मारकों के बारे में बताते हुए।

सीसीआरटी, नई दिल्ली के उप निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने इस कार्यक्रम में भाग लिया और समापन सत्र को संबोधित किया। उन्होंने छात्रों और स्कूलों के लाभ के लिए सीसीआरटी के उद्देश्यों और गतिविधियों के बारे में बताया।

## राजभाषा हिन्दी

दिनांक 26 दिसंबर 2023 को पूर्वाह्न में सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली के सम्मेलन कक्ष में अक्टूबर-दिसंबर 2023 तिमाही की हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई । इस कार्यशाला में आमंत्रित विशेषज्ञ डॉ बिचार दास, पूर्व निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली ने 'संघ की राजभाषा नीति और अधिकारियों/कर्मचारियों के दायित्व' विषय पर मुख्यालय के उपस्थित अधिकारियों-कर्मचारियों और केंद्र के चारों क्षेत्रीय केंद्र से ऑनलाइन जुड़े कार्मिकों के साथ रोचक और बहुउपयोगी चर्चा की।

इसके अलावा दिनांक दिनांक 26.12.2023 को ही अपराह्न सीसीआरटी के सम्मेलन कक्ष में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की गई। निदेशक, सीसीआरटी श्री ऋषि वशिष्ठ ने इस बैठक की अध्यक्षता की और सभी उपनिदेशक, अनुभाग प्रमुख और क्षेत्रीय केंद्रों के परामर्शक इसमें शामिल हुए। इस बैठक में पिछली तिमाही (जुलाई-सितंबर 2023) में राजभाषा से जुड़े कार्यों की समीक्षा की गई तथा आगामी तिमाही के दौरान आयोजित किए जाने वाले राजभाषा कार्यक्रमों की योजनाओं पर चर्चा की गई।

## प्रकाशन ( उत्पादन )/PUBLICATON (PRODUCTION)

सीसीआरटी ने 01-09 दिसंबर 2023 तक साहित्य अकादमी परिसर में आयोजित 'पुस्तकायन' पुस्तक मेले में सक्रिय भागीदारी की। माननीय संस्कृति राज्यमंत्री श्री अर्जुन राम मेघवाल द्वारा इस मेले का 01 दिसंबर को उद्घाटन किया गया । इस अवसर पर उन्होंने सीसीआरटी के स्टॉल (क्रम संख्या 6) का भ्रमण व अवलोकन किया तथा सीसीआरटी के प्रकाशनों की सराहना की और भविष्य में केन्द्र को अपने नए प्रकाशनों को सामने लाने का सुझाव दिया।

## राष्ट्र चिह्न

26 जनवरी 1950 को जब भारत एक गणतंत्र बना, तब उसने सारनाथ स्थित सम्राट अशोक के सिंह शीर्ष को अपने राष्ट्र चिह्न के रूप में स्वीकार किया। भारत के राष्ट्र चिह्न में एक गोलाकार शीर्ष फलक पर एक के पीछे एक बैठे चार सिंहों की आकृति है, जिसके मध्य में एक 24 अरों से युक्त चक्र (पहिया) है। इस शीर्ष फलक का प्रस्तर एक हाथी, एक दौड़ते घोड़े, एक साँड तथा एक सिंह की ऊंची उभारयुक्त आकृति से युक्त शिल्प से अलंकृत है, जो मध्यवर्ती चक्र द्वारा पृथक हैं। चिह्न के नीचे की ओर 'सत्यमेव जयते' देवनागरी लिपि में अंकित है जिसका अर्थ है 'सत्य की ही विजय होती है'।

भारत का राष्ट्र चिह्न सम्राट अशोक के सिंह शीर्ष का आंशिक प्रतिरूप है, जो रूपंकर कला की महान कृति है। इसमें शीर्ष फलक पर बैठे हुए केवल तीन सिंह दिखाई देते हैं, चौथा दिखाई नहीं देता। ये आकृतियाँ एक घंटाकार कमल पर अवस्थित हैं, किन्तु वह आधार राष्ट्र चिह्न में दिखाई नहीं देता।

*(सीसीआरटी के प्रकाशन – 'राष्ट्रीय प्रतीक' श्रृंखला की पुस्तिका 'राष्ट्र चिह्न' से उद्धृत)*

| सीसीआरटी मुख्यालय, नई दिल्ली: | सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र: |
|---|---|
| **डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर,** माननीय अध्यक्ष, सीसीआरटी<br>संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली<br>**श्री ऋषि वशिष्ठ,** निदेशक, सीसीआरटी<br>संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली<br>**डॉ. राहुल कुमार,** उप निदेशक, (प्रशिक्षण)<br>**श्री राजेश भटनागर,** उप निदेशक (वित्त)<br>**डॉ. संदीप शर्मा,** उपनिदेशक, (मूल्यांकन)<br>**श्री दिबाकर दास,** उप निदेशक, (छात्रवृत्ति एवं अध्येतावृत्ति)<br>**श्री एस.के.एल. गणेश,** उपनिदेशक (प्रशासन)<br>**श्री मनीष कुमार,** हिन्दी अधिकारी | **श्री वाई. चन्द्र शेखर,** परामर्शक<br>सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, हैदराबाद, तेलंगाना<br>**श्री ओम प्रकाश शर्मा,** परामर्शक<br>सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर, राजस्थान<br>**श्री निरंजन भुइयां,** परामर्शक<br>सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी, असम<br>**श्री एस.के.एल. गणेश,** उप. निदेशक (प्रशासन) एवं प्रभारी<br>सीसीआरटी क्षेत्रीय केंद्र, दमोह |


**सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र**

**(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत संस्थान)**

15ए, सेक्टर-7, द्वारका, नई दिल्ली - 110075 भारत

दूरभाष : 011-25309300 ई-मेल : dir.ccrt@nic.in वेबसाइट : www.ccrtindia.gov.in

**क्षेत्रीय केन्द्र**
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
# 1-118/सीसीआरटी, सर्वे नं. 64
(गूगल ऑफिस के निकट),
मधापुर, हैदराबाद, तेलंगाना
पिन कोड:- 500 084
दूरभाष: +91+040+23111910/23117050
ई-मेल: rchyd.ccrt@nic.in

**क्षेत्रीय केन्द्र**
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
58, जुरीपार, पंजाबारी रोड
गुवाहाटी, असम
पिन कोड: 781037
दूरभाष: +91-0361-2335317
ई-मेल: rcgwt.ccrt@nic.in

**क्षेत्रीय केन्द्र**
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
हवाला खुर्द, बड़गाँव,
उदयपुर, राजस्थान
पिन कोड: 313011
दूरभाष: +91+0294-2430764
ई-मेल: rcud.ccrt@nic.in

**क्षेत्रीय केन्द्र**
सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
पुरानी कलेक्ट्रेट बिल्डिंग,
दमोह, मध्य प्रदेश
पिन कोड:- 470661
ई-मेल: rcdamoh-ccrt@gov.in

@CCRTDelhi @ccrtofficialchannel ccrtnewdelhi @CCRTNewDelhi @ccrtofficial



*संरक्षक:* **डॉ. विनोद नारायण इंदूरकर**, अध्यक्ष, सीसीआरटी *मार्गदर्शक:* **श्री ऋषि वशिष्ठ,** निदेशक, सीसीआरटी
*संपादक:* **मनीष कुमार**, हिंदी अधिकारी *प्रकाशन सहयोग:* **श्री रमनीक कुमार**, प्रकाशन सहायक एवं **श्री विरेन्द्र कुमार**, ग्राफ़िक डिज़ाइनर